VOL- VIII ISSUE- VI JUNE 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

मंज़ूर एहतेशाम जी के उपन्यासों में सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ

राज बहादुर गौतम
शोध छात्र
हिन्दी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, वडोदरा (गुजरात)
ईमेल:-- rgrgautam74@gmail.com

हिन्दी कथा साहित्य में यथार्थवादी धारा के सशक्त रचनाकार के रूप में मंज़ूर एहतेशाम जी की एक अलग पहचान है। इन्होंने अपने सजग वैचारिक बोध के आधार पर युगीन जीवन के सम्पूर्ण यथार्थ को प्रस्तुत किया है। अपनी गहरी सामाजिक सद्भावना के कारण ही मंज़ूर एहतेशाम जी सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ को प्रस्तुत करने में सफल तथा लोकप्रिय हुए है। मंज़ूर एहतेशाम जी समूचे समाज में व्याप्त विसंगतियों और विरूपताओं को उजागर करने में भी सफल हुए है। इनकी सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना भारतीय समाज से उद्धरत है। ये समाज में व्याप्त समस्याओं का कारण सामंती तथा पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के शोषण को मानते है। एहतेशाम जी का चिंतन मानव केन्द्रित हैं। इन्होंने ऐसी समाज व्यवस्था की स्थापना पर बल दिया है जो समतामूलक और शोषण विहीन है।

मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपने उपन्यासों में समाज और संस्कृति को बड़ी ही सूक्ष्मता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। एहतेशाम जी ने अपनी रचनाओं में अधिकतर शहरी जीवन का वर्णन किया है। उन्होंने शहरी संस्कृति के विभिन्न आयामों की सुंदरता को अभिव्यक्त करते हुए पाठकों को संस्कृति के स्वरूपों से अवगत कराया है। उपन्यासों की कथावस्तु के आधार पर उनमें चित्रित लोक, सामंती, पूँजीवादी तथा सामाजिक संस्कृति के सुदृढ़ चित्र हमें देखने को मिल जाते हैं। एहतेशाम जी का मत है कि "उसे यह नशिस्ते अच्छी लगती थी। शुरू -शुरू में जरूर लगा था कि यह क्लासिकल म्यूजिक, आर्ट- और -पेंटिंग उसके बूते कि नहीं थी... धीरे-धीरे सब कुछ ठीक होता गया था सुनते रहने के साथ-साथ अच्छी म्यूजिक और बुरी म्यूजिक की तमीज भी होने लगती थी..... और ना भी हो तो क्या फर्क पड़ता है ?"[1] एहतेशाम जी ने यहां सांस्कृतिक याथार्थ को दर्शाया है।

मंज़ूर एहतेशाम जी के उपन्यासों में प्रायः समाज के सभी वर्गों को समुचित स्थान प्राप्त है। यह उनकी व्यापक औपन्यासिक दृष्टि का ही एक परिणाम है। जिसमें ग्रामीण समाज, नगरीय समाज, मध्यवर्गीय समाज, उच्चवर्गीय समाज एवं वंचित और दलित समाज आदि पाठक को मिल जाते हैं। " — क्योंकि आप लिखते हैं उस तरह का, और दिल से लिखते हैं, व्यंग्य के तेज़ाब के साथ इस बार लहजे में थोड़ा-सा मरहम भी था—आम आदमी, आम आदमी की समस्या, समाज बहुसंख्यिकी-अल्पसंख्यिकी मसले-मसाइल, दूसरी स्वतन्त्रता, ग़रीबी, बेरोज़गारी—यह सारे-के-सारे आपके लेखन के विषय हैं । कुछ शायद इसलिए कि आप बने ही

ऐसे हैं, सोच ही ऐसा सकते हैं । और कुछ शायद इसलिए भी ऐसा होता गया है कि आपको वाहवाही ऐसा करने में ही मिली है ।"[2] मंज़ूर एहतेशाम जी के मशहूर उपन्यास 'बशारत मंज़िल' में सामाजिक यथार्थ को इन पंक्तियों द्वारा दर्शाया गया है।

एहतेशाम जी के 'मदरसा' उपन्यास में यह देखा जा सकता है कि किस प्रकार समाज में रहने वाला एक आम आदमी अपने पड़ोसियों की किस प्रकार से सहायता करता है जिसमें सामाजिक यथार्थ का हमें बोध होता है। जिसकी पुष्टि इं पंक्तियों में है :-- "भाई ने ज़ोर देकर कहा था कि पिंकी को घर में छिपाना पड़ोसियों से दुश्मनी मोल लेना होगा । माँ ने तफ़सील जाननी चाही थी, और पिंकी ने सिर्फ़ इतना कहा था कि घरवाले उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ शादी करना चाहते थे, और वह अपनी नानी के पास, जालंधर जाना चाहती थी । उसकी बात सुनकर वह लोग दुविधा में पड़ गए थे, और अन्ततः उन्होंने पिंकी की सहायता करने का तय किया था ।"[3]

'कुछ दिन और' उपन्यास में एहतेशाम जी ने समाज में रह रहे दो लोगों की मित्रता को दर्शाया है जिसमें नारायण तथा राजू के संवाद। सेयाह ज़ाहिर हो जाता है कि नारायण इस संवाद में राजू की सहायता करने के मनोभाव को दर्शाया गया है जो कि इस उदाहरण में देखा जा सकता है- " फिर टेप - रिकॉर्डर, कैमरा उनकी कीमती दूरबीन—सब धीरे - धीरे घर से जाते रहे थे । और घर में जरूरत की चीज़े आती रही थीं । ' नारायण कुछ काम करने के मूड में हैं, ' एक शाम राजू ने कहा था । 'मुझसे कह रहा था, तुम मेरे पार्टनर हो जाओ । तुम्हें कुछ लगाने की जरूरत नहीं । मेरे सिर तो वैसे भी बहुत - सी ज़िम्मेदारीयाँ हैं । यह काम तुम देखना और प्रॉफ़िट आधा - आधा ।' ' नारायण को आपसे इतनी हमदर्दी कैसे हो गई है ?'"[4]

भारतीय समाज अंधविश्वासों, रूढ़ियों एवं कुरीतियों से भरा पड़ा है। इनकी जड़े समाज में इतने गहराई तक प्रवेश कर चुकी हैं कि उनका उन्मूलन सरल नहीं है। एहतेशाम जी ने अपने साहित्य में अंधविश्वासों, रूढ़ियों एवं कुरीतियों की कई घटनाएँ वर्णित की है। जो कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ का सटीक उदाहरण हैं।

मंज़ूर एहतेशाम जी ने भारतीय समाज के अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया है। अंधविश्वास की कई घटनाओं और कथाओं का वर्णन करने के साथ ही समाधान भी प्रस्तुत किया है। समाज में शिक्षा का प्रसार, जागृति और निर्भीकता के द्वारा अंधविश्वास को दूर किया जा सकता है। मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपने उपन्यासों में स्पष्ट रूप से नगरीय समाज की समस्याओं तथा विषमताओं को उजागर किया है। इन्होंने नगरीय जीवन शैली में व्याप्त माया, मोह, स्वार्थ, बढ़ती जनसंख्या, अंधविश्वास, सांप्रदायिकता तथा विलासी जीवन आदि समस्याओं की यथार्थ अभिव्यक्ति की है। अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु शहरी समाज किस प्रकार से अनैतिक कार्यों का वरण करता है। इसे व्यवहारिक रूप में इनके उपन्यासों में देखा जा सकता है। अपने 'सुख बरगद', 'बशारत मंज़िल', 'मदरसा' आदि उपन्यासों में समस्याओं के समाधान को भी एहतेशाम जी ने यथास्थान प्रस्तुत किया है।

एहतेशाम जी के 'मदरसा' उपन्यास में संस्कृति यथार्थ के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। यहाँ सांस्कृतिक यथार्थ का उदाहरण प्रस्तुत है:- "मुसलमान औरतें और लड़कियाँ, जिनमें ख़ासी तादाद स्कूल और कॉलेज जानेवाली लड़कियों की थी, पूरा काले रंग का बुर्क़ा पहनती थीं । इसमें भी, आज तक अधिक नहीं बदला है, लेकिन यह अम्मा और बम्बई वाले घर से इस अर्थ में भिन्न था कि अम्मा सिर्फ़ अधूरा बुर्क़ा पहनती थीं, और अब्बा के दीनी स्वभाव के बावजूद, बहनों को बुर्क़ा न पहनने की स्वतंत्रता थी।"[5]

मंज़ूर एहतेशाम जी का 'सूखा बरगद' मध्यवर्गीय जीवन पर आधारित एक सशक्त उपन्यास है। इसके बारे में वे स्वयं लिखते हैं- "इस उपन्यास में मैंने अपना और आपका, अपने देश के मध्यवर्गीय समाज का गुण-दोष भरा चित्र ज्यों का त्यों आँकने का यथामति, यथा साध्य प्रयत्न किया है।"६ इस उपन्यास में समाज के मध्यवर्ग की परंपरा, संस्कार, रहन-सहन, मनोवृत्तियाँ, आदते, बोलचाल तथा अन्य समस्याओं का सजीव एवं मार्मिक चित्रण हुआ है।

मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपने उपन्यासों में सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ को बड़ी सूक्ष्मता से अभिव्यक्त किया है। एहतेशाम जी ने अपनी रचनाओं में अधिकतर शहरी जीवन का वर्णन किया है। उन्होंने शहरी संस्कृति के विभिन्न आयामों की सुंदर अभिव्यक्त कराते हुए पाठकों को संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों से अवगत कराया है। उपन्यासों की कथावस्तु के आधार पर उनमें चित्रित लोक, सामंती, पूँजीवादी तथा सामाजिक संस्कृति के सुदृढ़ चित्र देखने को मिलते है। एहतेशाम जी ने अपने अनेक उपन्यासों 'कुछ दिन और', 'सूखा बरगद', 'पहर ढलते', 'बशारत मंज़िल', 'मदरसा' आदि रचनाओं में विभिन्न स्वरूपों में संस्कृति के चित्र प्रस्तुत किए है।

एहतेशाम जी के 'सूखा बरगद' उपन्यास में लोक संस्कृति के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। इसमें एहतेशाम जी ने विवाह से पूर्व होने वाले विभिन्न रीति-रिवाजों का वर्णन किया है- " हम लोग," मैं कहती हूं - " आगे कुछ करना ही नहीं चाहते। जागीरदार आना दिमाग से आगे बढ़ते हैं, तो प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के गुणगान करने लगते हैं।"। " नहीं," विजय जवाब देता है - "प्राचीन संस्कृति के बारे में गर्वित होना तो कोई बुरी बात नहीं। हमारी संस्कृति ऐसी है कि उस पर गर्व किया जाए।"[7] एहतेशाम जी व्यापक दृष्टि समाज में होने वाले प्रत्येक क्रिया-कलाप पर रही है। इसीलिए उन्होंने रस्मों-रिवाजों का इतना सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत किया है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि एहतेशाम जी ने अपने उपन्यासों में सभी वर्गों को समुचित स्थान प्रदान किया है। साथ ही तत्कालीन सामाजिक समस्याओं से भी हमें अवगत कराया है। इसका कारण यह है कि एहतेशाम जी ने अपने उपन्यासों की कथावस्तु समाज के विशाल प्रांगण से चुनी है। एहतेशाम जी ने जिस समाज का प्रस्तुतीकरण किया है वह प्रत्येक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। इसी तरह एहतेशाम जी ने संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों को अपने उपन्यासों में समुचित स्थान दिया है। इनके उपन्यासों में संस्कृति के लोक, सामंती, पूँजीवादी, एवं सामाजिक रूप देखने को मिलते हैं। एहतेशाम जी ने लोक जीवन में रीतिरिवाज, पर्व, उत्सव, त्यौहार एवं संस्कारों पर प्रकाश डालते हुए उनकी महत्ता को प्रदर्शित किया है। ये रूढ़िवादी परम्पराओं और अंधविश्वासों के पक्षधर नहीं थे। उन्होंने सदैव ऐसी परम्पराओं की अवहेलना की जो समाज की उन्नति में बाधक होती है। सामंती संस्कृति के अंतर्गत एहतेशाम जी ने सामंतों के विभिन्न रूचि, क्रियाकलाप, मनोरंजन के साधन, खानपान, रहन-सहन, तथा रीति-रिवाज आदि का वर्णन किया है। पूँजीवादी संस्कृति में एहतेशाम जी ने गिरते हुए मानव मूल्यों पर प्रकाश डाला है। स्वार्थपरता, अवसरवादिता, धन लोलुपता, विलासिता, पाश्चात्य प्रभाव तथा अनैतिक कार्यों को अभिव्यक्त कर एहतेशाम जी ने पूँजीवादी संस्कृति के विकृत स्वरूप को उजागर किया है। एहतेशाम जी की सूक्ष्म दृष्टि मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर थी। यही कारण है कि उन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक संस्कृति पर अधिक बल दिया। सामाजिक संस्कृति

के द्वारा वे सर्वत्र शांति एवं सौहार्द्र चाहते हैं। जिससे मानव का विकास संभव हो सके एवं अपना विकास कार सके।

संदर्भ सूची :-

1. मंज़ूर एहतेशाम,पहर ढलते, पृष्ठ संख्या-५८
2. मंज़ूर एहतेशाम, बशारत मंज़िल, पृष्ठ संख्या-१२
3. मंज़ूर एहतेशाम, मदरसा, पृष्ठ संख्या-१०८
4. मंज़ूर एहतेशाम, कुछ दिन और, पृष्ठ संख्या-६३
5. मंज़ूर एहतेशाम, मदरसा, पृष्ठ संख्या-११५
6. मंज़ूर एहतेशाम जी से प्रत्यक्ष रूप में वार्ता, 10/02,2016
7. मंज़ूर एहतेशाम, सूखा बरगद, पृष्ठ संख्या -१०५